3. अमर उजाला, 7 से 10 सितंबर 2019, दिल्ली संस्करण, नई दिल्ली

4. अटल, योगेश,. ( 2015 ) समाजशास्त्र .समाज की समझ, नई दिल्ली.डार्लिंग किंडरस्ले(इंडिया)प्रा.लि:, पियरिसन एजुकेशन

5. कौल, लोकेश, शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली ( 2009), विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली.

6. गौतम, सुरेश / वीणा: हिंदी पत्रकारिता, ( 2001 ), साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

7. तिवारी अर्जुन: आधुनिक पत्रकारिता ... विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी

8. परिहार, कालूराम,. ( 2008 ), मीडिया ... सारोकार, नई दिल्ली अनामिका ... डिस्ट्रीब्यूटर्स:, प्रा.लि

9. पांडे, कैलाथनाथ .( 2007 ), प्रयोजन मूलक ... नई भूमिका, नई दिल्ली राजकमल प्रकाशन, ...

10. भारत में हिंदी पत्रकारिता भारतकोष ... bharatdiscovery-org

□□□

खबर देने में देरी की भरपाई करते हुए नवभारत ने बेहतरीन ग्राफिक्स का भी इस्तेमाल किया। "**चंद्रमा को चूमने से पहले विक्रम का संपर्क टूटा, लेकिन उम्मीद अभी कायम है**", **नई सुबह होगी देश आपके साथ है**" शीर्षक के साथ पत्र ने इसरो को पीएम के हवाले से ढाढस भी बंधाया।

जनसत्ता ने 8 सितंबर को आधे पृष्ठ पर "**संपर्क टूटा, उम्मीद नहीं**" जैसे मुख्य शीर्षक के साथ पूरी खबर, उससे संबंधित व अन्य खबरें भी प्रकाशित की। खबरों के साथ समझाने के लिए सरल भाषा में तकनीकी शब्दावली को भी व्याख्यायित किया। "**रफ ब्रेकिंग**", "**फाइन ब्रेकिंग**", "**चुनौती के वो पल**" इसरो कमांड सेंटर की दुर्लभ तस्वीर के साथ और इसरो का बयान भी प्रकाशित किया।

**निष्कर्ष** –

इस संबंध में किए गए शोध के निष्कर्ष इस प्रकार रहे –

1– **भाषा**– चंद्रयान 2 की खबरों को लेकर समाचार पत्रों ने काफी नपी तुली और संयमित भाषा का प्रयोग किया। भाषा के स्तर पर पेलोड, थस्टर, बूस्टर, आर्बिटर, लूनर आदि अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया। लेकिन इन शब्दों के हिंदी में अर्थ नही बताए गए। लूनर डे का अर्थ चयनित तीनों समाचार पत्रों ने चंद्र दिवस के रूप में बताया। अमर उजाला समाचार पत्र ने चंद्रयान 2 से संबंधित खबरों के लिए मानक भाषा की जगह आम पाठकों को समझ आने वाली भाषा का प्रयोग किया। जनसत्ता ने भाषा समाचार समिति की खबरों की भाषा में फेरबदल कर उसे पाठकों तक संप्रेषित किया। नवभारत भारत टाइम्स ने पीटीआई की खबरों का अनुवाद किया। अनुवाद में भाषा कई मौकों पर पटरी से उतरती हुई सी लगी। जैसे " चांद के दामन पर चंद्रयान "। नवभारत टाइम्स ने हिंदी के साथ बहुलता में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया। एक और उदाहरण दृष्टव्य है– " दुआओं के बीच साइंस ने लगाई छलांग"। इसमें साइंस की जगह विज्ञान शब्द का भी प्रयोग हो सकता था। कुल मिलाकर अमर उजाला समाचार पत्र में चंद्रयान 2 की खबरों की भाषा सबसे बेहतर रही।

2– **श्रोत**– अमर उजाला, जनसत्ता और नवभारत टाइम्स यानि तीनों समाचार पत्रों में चंद्रयान दो से संबंधित सभी खबरों का मुख्य श्रोत संवाद समितियां ही रही। तीनों समाचार पत्रों ने अपने संवाददाताओं की कोई रिपोर्ट प्रकाशित नही की। इसकी एक बड़ी वजह यह भी हो सकती है कि चयनित तीनों समाचार पत्रों में विज्ञान संवाददाता नही है या उनकी नियुक्ति नही की गई है। संवाद समितियों के अलावा इन तीनों समाचार पत्रों ने मेहमान लेखकों के लेख भी प्रकाशित किए। इस तरह से तीनों समाचार पत्रों ने चंद्रयान 2 से संबंधित खबरों के लिए संवाद समिति को मुख्य श्रोत के रूप में इस्तेमाल किया।

3– **प्रस्तुतिकरण**– चंद्रयान 2 की खबरों को लेकर अमर उजाला समाचार पत्र का प्रस्तुतिकरण सबसे बेहतर रहा। बेहतरीन ग्राफिक्स, लाल, धूसर और काले रंगों का प्रयोग, खबर को समझाने के लिए और उसमें विशिष्टता लाने के लिए बॉक्स और के साथ खूबसूरत ढंग से उप शीर्षकों का प्रयोग किया गया। जनसत्ता ने चंद्रयान से संबंधित खबरों को विशेष महत्व देने के लिए पहली लीड बनाने के साथ विशिष्ट तरह के उप शीर्षक भी दिए गए। खबर को समग्रता में प्रस्तुत करने की कोशिश की गई। नवभारत टाइम्स ने खबर के प्रति अपने विशेष झुकाव को प्रदर्शित करने और प्रस्तुतिकरण में विशिष्टता लाने के लिए फ्लैप का प्रयोग किया। फ्लैप का प्रयोग आमतौर पर विज्ञापन या किसी बहुत बड़ी और अचानक आधी रात को आने वाली खबर के लिए किया जाता है। इस प्रकार नवभारत ने खबर का प्रस्तुतिकरण तो बेहतर किया पर उसकी कमजोर अंतर्वस्तु से पाठकों को जरूर निराशा हुई होगी।

4– **मूल्यवर्धन**– अमर उजाला, जनसत्ता और नवभारत टाइम्स ने चंद्रयान 2 से संबंधित खबरों में मूल्यसंवर्धन की बेहतरीन कोशिश की। अमर उजाला का मूल्यसंवर्धन शानदार रहा। जनसत्ता और नवभारत टाइम्स समाचार पत्र में मूल्यसंवर्धन औसत दर्जे का रहा। कुलमिलाकर अमर उजाला समाचार पत्र का चंद्रयान 2 की खबरों का प्रस्तुतिकरण सबसे बेहतर रहा।

5– **संपादकीय नीति और संपादकीय** – चंद्रयान 2 के लिए 6 सितंबर की रात जैसे कत्ल की रात थी। संबंधित खबरों को लेकर अमर उजाला की संपादकीय नीति बेहद स्पष्ट, सधी हुई और पाठक उन्मुखी रही। इसीलिए अमर उजाला ने अपनी पेज छोड़ने की समय सीमा को बढ़ाया। शब्दों के चयन में विशेष सावधानी बरती गई। 7 सितंबर की सुबह अमर उजाला में वो सारी खबरें थी जो चंद्र घंटे पहले घटित हुई थी। लेकिन जनसत्ता और नवभारत ने खबर को लेकर कोई विशिष्ट नीति नहीं अपनाई। यही वजह रही कि जनसत्ता और नवभारत टाइम्स समाचार पत्रों के 7 सितंबर के संस्करण में पूरी खबर गोल मोल तरीके से पेश की गई। इन दोनों समाचार पत्रों के पाठकों को चंद्रयान 2 की विक्रम से संपर्क टूटने की खबर 8 सितंबर की सुबह पढ़ने को मिली। अमर उजाला एक मात्र समाचार पत्र ऐसा रहा जिसने चंद्रयान से संबंधित घटना को लेकर खुद संपादकीय लिखने की जगह मेहमान विज्ञान लेखक न्यूयार्क टाइम्स के जोनाथन ओ केल्हन लेख के लेख को संपादकीय के रूप समादृत किया। कुल मिलाकर अमर उजाला समाचार पत्र की चंद्रयान 2 की खबरों को लेकर संपादकीय नीति बेहद स्पष्ट सुविचारित और बेहतर रही।

**सन्दर्भ** :–


1. जनसत्ता, 7 से 10 सितंबर 2019 दिल्ली संस्करण, नई दिल्ली
2. नवभारत टाइम्स, 7 से 10 सितंबर 2019, दिल्ली एनसीआर संस्करण, नई दिल्ली

खबरों का श्रोत जाहिर किया और न ही किसी को क्रेडिट दिया। अमर उजाला में यह पता करना मुश्किल था कि चंद्रयान 2 से संबंधित खबरों के लिए समाचार पत्र ने किस श्रोत पर अधिक भरोसा किया।

एजेंसियों पर निर्भता रही। खबरों का विश्लेषण करने की कोशिश नहीं की गई। खबर का परीक्षण और उसकी व्याख्या की कोशिश भी नहीं की गई। चंद्रयान 2 की खबरों को पढ़कर ऐसा प्रतीत हुआ अंतरिक्ष विज्ञान की यह घटना भी समाचार पत्रों के लिए दूसरी बड़ी घटना से अधिक नहीं थी। खबरों के संकलन के लिए तीनों समाचार पत्रों में विज्ञान संवाददाता की रिपोर्ट नहीं मिली। यह इस लिए भी हो सकता है कि तीनों समाचार पत्रों में विज्ञान या साइंस रिपोर्टर हैं ही नहीं। यानि समाचार पत्रों में साइंस रिपोर्टर का पद नहीं है।

चंद्रयान 2 से संबंधित खबरों की भाषा टीवी पर न खराब रही न अच्छी। इसका कारण यह भी है कि अर्से बाद टीवी से चिपकने को मजबूर हुए दर्शकों को निजी टीवी चैनलों ने दूरदर्शन के सहारे छोड़ दिया। बीच बीच चैनल्स के एँकरों ने अपनी उपस्थिति जरूर दर्ज कराई। 7 सितंबर के बाद 8 सितंबर को टीवी में बाकी खबरों की तरह चंद्रयान 2 भी एक खबर मात्र थी। लेकिन समाचार पत्रों को लाइव का सहारा नहीं था। उनके पास एजेंसियों का ही सहारा था। जनसत्ता ने भरसक अपनी स्टाइल शीट का ध्यान रखा और चंद्रयान 2 की खबरों के लिए अपनी स्टाइल शीट के मुताबिक भाषा का प्रयोग किया।

जनसत्ता ने 7 तारीख को जो पत्र प्रकाशित किया उसमें पहले पेज पर पहली खबर चंद्रयान 2 से संबंधित थी। खबर को **'बच्चे को पालने में' रखने जैसा मिशन** 'शीर्षक दिया। यह शीर्षक अपने आप अखबार की इस खबर के प्रति संवेदनशीलता और उसके आग्रह की पूरी कहानी कह देता है। इस शीर्षक की भाषा संतुलित है लेकिन यह शीर्षक बताता है कि खबर रात 12 बजे से पहले लिखी जा चुकी थी। पूरी खबर की भाषा साधारण रही। उसमें किसी तरह का वैशिष्ट्य नहीं दिखा। पूरी खबर में चांद तक पहुंचने का सफरनामा बताया गया। प्रस्तुतिकरण साधारण किंतु प्रभावी रहा। इस खबर में दूरी से संबंधित आंकड़े देकर उसे मूल्यवर्धित भी करने की कोशिश की गई। इसरो की प्रेस विज्ञप्ति से बाक्स आइटम निकाले गए।

जनसत्ता ने पूरी खबर तक प्रकाशित नही की। इसलिए इस खबर पर संपादकीय भी नही प्रकाशित किया। लेकिन संपादकीय पृष्ठ पर साहित्यकार मृदुला सिन्हा का आलेख **"चंदा मामा का घर"** शीर्षक से प्रकाशित किया। हालांकि ये बहस का विषय हो सकता है कि साहित्य और विज्ञान के घालमेल वाला यह आलेख जनसत्ता के पाठकों को कितना प्रभावित कर पाया होगा।

नवभारत टाइम्स ने भी भारत के लिहाज से घट रही इतनी बड़ी घटना को पहले पृष्ठ पर आधे अधुरे मन से पहली लीड बनाया। पत्र ने बॉक्स में " **चांद के दामन** पर भारत " से गोल मोल करके प्रकाशित किया। इस खबर का प्रस्तुति बेहतर रहा। परंतु इस खबर में यह जानकारी नही दी कि विक्रम का संपर्क टूट गया। इसकी यह वजह भी सकती है नवभारत टाइम्स में पेज छोड़ने की जो मानक डेड लाइन या 12 बजे थी उसे आगे बढ़ाने की कोशिश या पहल नहीं पीटीआई के श्रोत से ली गई खबर में मूल्यवर्धन की कोशिश नहीं आई। खबर की भाषा इंग्लिश रही।

अमर उजाला इस खबर के मामले में बाजी मार ले गया। इसकी वजह यह भी हो सकती है कि अमर उजाला के एडीशन की डेडलाइन रात 1 से 2 तक होती है। सुबह लोगों के घरो में जो अमर उजाला पहुंचा उसमें मास्ट हेड के साथ खबर को चांद के पार्श्व के साथ प्रस्तुत किया गया। " **चांद की दहलीज पर विक्रम, संपर्क टूटा उम्मीदें कायम** " इस शीर्षक के साथ लीड खबर प्रकाशित की गई। इसके साथ मूल्यवर्धन के लिए " **आखिरी पलों में देश की सांसें थमी रही** " " रात 1: **55 बजे के बाद इसरो से नहीं जुड़ सका विक्रम** " " 2.1 **किमी पहले सिग्नल बंद** " के तहत मिनट दर मिनट का हाल भी प्रस्तुत किया गया। " **अंतिम डेढ़ मिनट मिनट** में **वक्त ठहर गया** " शीर्षक के साथ बॉक्स में 45 दिन का सफरनामा, " **आर्बिटर काम करता रहेगा** " चांद की सतह पर उतरते लैंडर की प्रतीकात्मक तस्वीर, "**पहली बार हो रही है दक्षिणी ध्रुव पर लैंडिंग**" **और पीएम का संदेश** " **हौसला दिया पीएम ने** " जैसे शीर्षक के साथ खबर के हर कोण को छूने की कोशिश की गई।

आधा पहला पृष्ठ चंद्रयान 2 की खबर से भरा रहा। अमर उजाला अखबार उनके लिए भी टीवी जैसा था जिन्होने देर रात तक जागकर लाइव नहीं देखा। पूरी खबर की भाषा नपीतुली रही। अंग्रेजी शब्दों का सरल हिंदी में भावानुवाद दिया गया। इसके साथ ही अमर उजाला ने खबर के प्रति पाठकों के लगाव और उनकी अपेक्षाओ को पूरा करने के लिए अंदर आधे पृष्ठ पर इसरो के बनाए गए कार्टून सहित देश दुनिया से मिले संदेशों और अन्य संबंधित खबरों को प्रस्तुत किया। अमर उजाला ने इस खबर पर संपादकीय की जगह मेहमान न्यूयार्क टाइम्स के मेहमान लेखक विज्ञान पत्रकार जोनाथन ओ कैल्हन का लेख " **धीमा नही पड़ेगा भारत का चंद्र अभियान** " भी प्रकाशित किया।

सितंबर 8 को जनसत्ता और नवभारत ने पिछले रात की खबर को पूरे सम्मान के साथ पहले पन्नो में जगह दी। लेकिन तब तक खबर 24 घंटे से अधिक पुरानी पड़ चुकी थी। इसलिए नवभारत ने फ्लैप का प्रयोग किया। (खबर को विशिष्ट बनाने के लिए समाचार पत्रों में पहले पेज से पहले आधा पृष्ठ लगाया जाता है उसे ही फ्लैप कहा जाता है) नवभारत टाइम्स ने 8 सितंबर को **"देख लिया चांद का दर"** शीर्षक के साथ खबर प्रकाशित की।

...का कितना ख्याल रखा गया है। लेख, आलेख और संपादकीय में कितनी कल्पना है और कितना तर्क है।

शोध के लिए 3 समाचार पत्रों जनसत्ता, नवभारत टाइम्स और अमर उजाला का चयन किया गया। जनसत्ता बौद्धिक वर्ग में गंभीर प्रकृति का पत्र माना जाता है। नवभारत टाइम्स निडरता के साथ अपने नवीन बाजार परक प्रयोगों के लिए जाना जाता है। अमर उजाला बहुप्रसारित और संतुलित समाचार पत्र माना जाता है। तीनों समाचार पत्रों के 7 सितंबर से 10 सितंबर यानि कुल 4 दिनों के अंकों को इस शोध में शामिल किया गया है।

**शोध के उद्देश्य –**

1– समाचार पत्रों में चंद्रयान 2 से संबंधित खबरों के श्रोत, संकलन एवं भाषा का अध्ययन।

2– समाचार पत्रों में चंद्रयान 2 से संबंधित खबरों की प्रस्तुतिकरण का अध्ययन।

3– समाचार पत्रों में चंद्रयान 2 से संबंधित खबरों में मूल्यवर्धन (अंसनम ककपजपवद) का अध्ययन।

4– समाचार पत्रों में चंद्रयान 2 से संबंधित खबरों के लिए संपादकीय नीति का अध्ययन।

तालिका 1– समाचार पत्रों का परिचय

| क्र.सं. | पत्र का नाम | संपादक | प्रकाशन स्थल |
|---|---|---|---|
| 1 | जनसत्ता | मुकेश भारद्वाज | नई दिल्ली |
| 2 | नवभारत टाइम्स | ए पी खाती | नई दिल्ली |
| 3 | अमर उजाला | डॉ इंदु शेखर पंचोली | नई दिल्ली |

तालिका 2 – समाचार पत्रों की अवधिकता और शोध के लिए चयनित अंकों का संकलन

| क्र.सं. | पत्र का नाम | पत्र की अवधिकता | शोध की अवधि | कुल अंक |
|---|---|---|---|---|
| 1 | जनसत्ता | दैनिक | 7 से 10 सितंबर 2019 | 4 |
| 2 | नवभारत टाइम्स | दैनिक | 7 से 10 सितंबर 2019 | 4 |
| 3 | अमर उजाला | दैनिक | 7 से 10 सितंबर 2019 | 4 |

तालिका 3– समाचार पत्रों में चंद्रयान से संबंधित खबरों का प्रतिशत

| क्र.सं. | पत्र का नाम | कुल पृष्ठ | कुल खबरें | चंद्रयान से संबंधित खबरें, लेख, आलेख | प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | जनसत्ता | 58 / 4 | 243 | 14 | 5.76 |
| 2 | नवभारत टाइम्स | 46 / 4 | 480 | 16 | 3.33 |
| 3 | अमर उजाला | 64 / 4 | 427 | 35 | 8.19 |

**विश्लेषण –**

श्रोत के मामले में देखा जाए तो जनसत्ता , नवभारत टाइम्स और अमर उजाला पूरी तरह शत प्रतिशत एंजेसियों पर निर्भर रहे। जनसत्ता ने पीटीआई की हिंदी सेवा भाषा से ही अधिकांश खबरें संकलित की। कई खबरों में हेडलाइन के अलावा बाकी की खबर पूरी वैसी ही प्रस्तुत की गई जैसी भाषा ने उन्हे दी। नवभारत टाइम्स ने भाषा की जगह पीटीआई से खबरों का संकलन किया। नवभारत टाइम्स ने पीटीआई की खबरों को अनुवाद कर उन्हे प्रकाशित किया। नवभारत ने पीटीआई को श्रोत के रूप में जरूर इस्तेमाल किया लेकिन शीर्षक देने से लेकर ग्राफिक्स के प्रयोग तक कई नई चीजें भी खबरों में जोड़ी। यानि खबरों में मूल्यवर्धन किया। उन्हे आकर्षक बनाने के लिए चांद के पार्श्व का भी इस्तेमाल किया। अमर उजाला ने चंद्रयान 2 से संबंधित खबरों के लिए अधिकांश मौकों पर किस श्रोत का सहारा लिया इसका जिक्र करना जरूरी नहीं समझा। बैंगलूरू से आई सभी खबूरों को ब्यूरो की रिपोर्ट बनाकर प्रस्तुत किया गया। श्रोत के मामले में जनसत्ता ने ईमानदारीपूर्वक चंद्रयान 2 से संबंधित अपनी सभी खबरों के श्रोत को जाहिर किया। जनसत्ता ने श्रोत के रूप भाषा को उसका क्रेडिट भी दिया। नवभारत ने भी पीटीआई को खबरों के लिए क्रेडिट दिया। लेकिन अमर उजाला ने न तो

ISSN - 2229-3620
APPROVED UGC CARE

SHODH SANCHAR BULLE…
Vol. 10, Issue 38 (II) April-June 20…
Page Nos. 40…

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

# समाचार पत्रों में विज्ञान लेखन - एक अध्ययन (चंद्रयान 2 के विशेष संदर्भ में)

❑ डॉ. ओमप्रकाश…

## शोध सारांश

देश के जनसंचार माध्यम विज्ञान और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने में अहम और सबसे बडी भूमिका निभाते है। लेकि… माध्यमों मे विज्ञान की खबरें जिस अंदाज में प्रस्तुत की जाती है उसे संतोषजनक नहीं कहा जा सकता। पिछले दिनो चंद्रयान… प्रक्षेपण की घटना को उदाहरण मान लिया जाए तो मुद्रित और दृश्य श्रव्य माध्यमों ने इस घटना को लोकप्रिय बनाने में कस… छोडी। टीवी माध्यमों में चंद्रयान 2 की घटना को आकर्षक रूप से प्रस्तुत किया गया। दूरदर्शन से मिली फीड के सजीव प्रसारण… माध्यम इस घटना के बारे में सटीक जानकारी देने, सही जानकारी देने, वैज्ञानिक घटना का परीक्षण करने, विश्लषण करने के… कार्य से अपने बचाने में कामयाब रहे। लेकिन समाचार पत्रों का प्रदर्शन इस मामले में औसत रहा।

**Keywords:** समाचार पत्रों, चंद्रयान 2, विज्ञान लेखन, जनसंचार, दूरदर्शन, सजीव प्रसारण, प्रदर्शन

**भूमिका –**

विज्ञान यानि सुव्यवस्थित, सुविचारित, क्रमबद्ध, तर्कपूर्ण तरीके से अर्जित किया जाने वाला ज्ञान। ऐसा ज्ञान जो संपुष्टि के साथ संतुष्ट भी कर सके। लेकिन समाचार पत्रों में विज्ञान लेखन में आमतौर पर ये सारे तत्व गायब रहते हैं। नवीनता, रोचकता, भावप्रवणता, लयबद्धता और क्रमबद्धता यह वो गुण हैं जो किसी भी सूचना को समाचार बनाते है। वैज्ञानिक घटनाओं, वैज्ञानिक गतिविधियों, नवोन्मषों, नवाचारों और नवीन सिद्धांतों की खबरें ही विज्ञान समाचार कहलाती हैं। लेकिन इनके लेखन और प्रस्तुतिकरण में अन्य खबरों यथा राजनीति,अपराध जैसी रोचकता, सही और आसानी से समझ आने वाले शब्दों का चयन और वाक्यविन्यास सही न होने के कारण विज्ञान समाचार पाठकों में रुचि नहीं पैदा कर पाते। इसमें जितनी कमी विज्ञान समाचार लिखने वालों की है उससे कही अधिक उसे प्रस्तुत करने वालों की भी है। लेखक के लिए क्या लिखा जाए उससे अधिक जरूरी है कि कैसे लिखा जाए ताकि पाठक को वह समझ आए और उसमें अधिक पढ़ने , जानकारी हासिल करने की ललक जगाए।

विज्ञान शब्द वि+ज्ञान से बना है। इसका अर्थ है एक विशेष प्रकार का ज्ञान या विशिष्ट ज्ञान। साइंस शब्द विज्ञान के अर्थ में प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार विज्ञान का मतलब है ऐसा ज्ञान जो बुद्धि द्वारा ग्रहण किया जाए। जिस शब्दों के माध्यम से दूसरों तक संप्रेषित किया जाए। यानि तर्क सम्मत और परीक्षण के योग्य ज्ञान को विज्ञान कहा जाता है। विज्ञान में संवेदना, मान्यता, परंपरा की जगह नवीनता होती है। इसीलिए इ… लेखन मे विशिष्टता होना स्वाभाविक है। विज्ञान जन जन… पहुंचे इसक लिए जरूरी है वह आमजन की भाषा में ही उन… पहुंचाया या संप्रषित किया जाए। संचार माध्यम इसमें सबसे ब… भूमिका निभाते हैं। लेकिन संचार माध्यमों के जरिए विज्ञान… जानकारी आम जन तक पहुंचे इसके लिए जरूरी है… बोलचाल या समाचार की भाषा में ही उसका सरल लेखन… प्रकाशन भी हो। इसीलिए इसके लेखन के लिए साहि… राजनीति,, अपराध और व्यापार से संबंधित विषयों की स… रखने वाले पत्रकारों, लेखकों की जगह विज्ञान के जानक… पत्रकारों, लेखकों की जरूरत होती है। वैज्ञानिक कर्म,नवोन्म… नवीन ज्ञान, वैज्ञानिक घटनाएं और उनके अर्थ लगाना समझ… जिस प्रकार सबके लिए संभव नहीं है उसी तरह आम पत्रकारों के लिए भी पूरी तरह संभव नहीं है।

**शोध प्रविधि –**

इस शोध में अंतर्वस्तु विश्लेषण के लिए प्रत्यक्ष अवलोकन अध्ययन पद्धति का उपयोग किया गया है। अध्ययन के उपरांत खबरों का त्रिस्तरीय विश्लेषण का गया है। प्राथमिक स्तर पर खबरों के श्रोत के बारे में जानकारी एकत्र की गई है। द्वितीक स्तर पर खबरों के कंटेट और तृतीय स्तर पर खबरों के प्रस्तुतिकरण का अध्ययन किया गया है। तीनों स्तरों पर इस बात का विशेष ध्यान दिया गया है कि खबरों के लेखन में वैज्ञानिक शब्दावली भाषा को कितनी सरलतम तरीके से लिखा गया है। पाठकों के

*अतिथि शिक्षक, एमसीयू, नोएडा कैंपस, नोएडा

# CONTENTS


| S.No. | Topic | | Page No. |
|---|---|---|---|
| 1. | बाजारवाद और इक्कीसवीं सदी की कविता | डॉ0 ममता खांडल | 1 |
| 2. | उच्च शिक्षा–संख्यात्मक बनाम गुणात्मक अध्ययन | डॉ0 मीना<br>प्रो0 सुशील कुमार मिश्रा | 5 |
| 3. | बंधेज – राजस्थान की परम्परागत लोककला | डॉ0 जसमिंदर कौर | 9 |
| 4. | चिड़ावा तहसील में जल संसाधन एवं कृषि के लिए जल गुणवत्ता का मुल्यांकन | डॉ0 संजीव कुमार | 14 |
| 5. | सार्वजनिक जीवन में स्वामी विवेकानन्द का स्त्री विषयक दृष्टिकोण | डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव | 22 |
| 6. | अनुसूचित जनजाति तथा अन्य परंपरागत वनवासी (वन अधिकारों को मान्यता) अधिनियम, 2006: प्रावधान, चुनौतियां एवं सुझाव | माला मेश्राम<br>मनीष चन्द्रा | 26 |
| 7. | कोरोना वायरस ( कोविड–19 ) का सामाजिक प्रभाव : समाजशास्त्रीय पाठ | डॉ. विमल कुमार लहरी | 30 |
| 8. | बंगाली समुदाय के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (उत्तराखण्ड के रूद्रपुर शहर के 50 कार्यशील महिलाओं के सन्दर्भ में) | संगीता रानी | 34 |
| 9. | समाचार पत्रों में विज्ञान लेखन – एक अध्ययन (चंद्रयान 2 के विशेष संदर्भ में) | डॉ ओमशंकर गुप्ता | 40 |
| 10. | अंग्रेजों एवं रणजीत सिंह के सम्बन्धों में अम्बाला क्षेत्र का रणनीतिक महत्व (1808–09 ई.) | गुरमीत सिंह | 45 |
| 11 | हिन्दी पत्रकारिता की विकसनसील परम्परा और महात्मा गाँधी | विश्वनाथ शर्मा | 48 |
| 12. | वैदिक साहित्य में निदर्शित राज्य के उद्देश्य एवं कार्यों का परिशीलन | डॉ0 एम0 एल0 यादव | 52 |
| 13. | डिजिटल युग में डेटा उपभोग प्रवृति | डॉ0 विवेक श्रीवास्तव | 55 |
| 14. | बुंदेलखंड के ग्रामीण–शहरी तथा छात्र–छात्राओं के वंचन का तुलनात्मक अध्ययन | पुनीत कुमार<br>डॉ0 स्मिता जायसवाल | 60 |
| 15. | वर्तमान भारतीय समाजिक परिवेश में आधुनिकीकरण का प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन | पल्लवी कुमारी | 65 |
| 16. | सर सैयद : सवालों के घेरे में | डॉ0 धीरज कुमार चौधरी | 70 |
| 17. | भारत–भारती : भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता के संदर्भ में | रामाश्रय यादव | 73 |
| 18. | सेवापूर्व शिक्षक शिक्षा में मूल्य | डॉ0 रमा शर्मा | 76 |
| 19. | आध्यात्मिक व व्यवहारिक जीवन में उद्गीत की प्रासंगिकता | मयंक भारद्वाज | 80 |
| 20. | भारत और यूरोपीय संघ : प्रगति में भागीदार | डॉ जितेन्द्र कुमार पाण्डेय | 83 |
| 21. | कार्यरत महिलाओं के विरूद्ध शोषण : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन | डॉ0 रेनू प्रकाश | 89 |

ISSN 2229-3620

UGC APPROVED
CARE LISTED JOURNAL
GOVT. OF INDIA RNI NO. - UPBIL/2015/62096

B

# शोध संचार बुलेटिन

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY BILINGUAL
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

★ Vol. 10 ★ Issue 38 (II) ★ April to June 2020

Editor in Chief
Dr. Vinay Kumar Sharma
D. Litt. - Gold Medalist

sanchar
Educational & Research Foundation